श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

मई - चतुर्थ
अंक - 12

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

Address Here

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष (1952 - 2026)

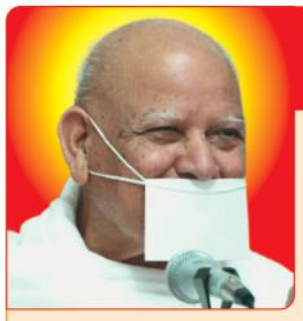

वीतराग दर्शन में सामायिक की विधि

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

पच्चीस बोल में पाँच चारित्र का वर्णन है उसमें प्रथम है, सामायिक चारित्र, अंतिम है यथाख्यात चारित्र। श्रमण जीवन पर्यंत सामायिक में रहता है और श्रावक का नौवा व्रत है सामायिक जो सभी के लिए अनिवार्य है। वीतराग साधक को सर्वप्रथम यह ज्ञान होना चाहिए कि 'मैं कौन हूँ?' ये ज्ञान जिसे हो गया, वो ज्ञानी है। ऐसे ज्ञानी को अपने निज जीव तत्व का बोध होता है। उसे हम स्वरूप बोध कहते हैं।

स्वरूप बोध तीर्थंकर या सद्गुरु के उपदेश से अथवा स्वतः होता है। उस साधक को जब अपने स्वरूप में श्रद्धा हो जाती है तो तीर्थंकर उस साधक को मुक्त होने के लिए, कर्म बंधन को रोकने के लिए, सामायिक की साधना देते है। वीतराग दर्शन का आधर है-भेद विज्ञान। जड़ और चेतन का जिसे ज्ञान नहीं वह अज्ञानी है, वह मिथ्यात्वी है। वह चार गति चौरासी लाख जीवायोनि में भ्रमण करने वाला है। इसीलिए श्री दशवैकालिक सूत्र में कहा -

पढ़मं णाणं तओ दया : प्रथम आत्म ज्ञान फिर आचरण अर्थात् चारित्र, सामायिक चरित्र है।

सामायिक का अर्थ : दो घड़ी के लिए साधक पुद्गलों का ध्यान छोड़कर अर्थात् आर्त-रौद्र ध्यान छोड़कर धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान में स्थित हो जाए, उसे सामायिक कहते है।

सामायिक में प्रवेश कैसे करें? : सामायिक में प्रवेश के लिए विनयपूर्वक, अरिहंतों सिद्धों को नमन कर आलोचना सूत्र से जीव में स्थित होकर अजीव शरीर के प्रमाद से हुई विराधनाओं के लिए जड़ और जीव का भेद करते हुए, अभेद दृष्टि से प्रत्येक जीव से क्षमा मांगता है।

कायोत्सर्ग : आत्मा पर लगे कर्मों की विशेष शुद्धि के लिए तस्स-उत्तरी के पाठ में वह प्रायश्चित करने के लिए, शल्य रहित होने के लिए, पाप कर्म से मुक्त करने के लिए, कर्म को क्षय करने के लिए कायोत्सर्ग में प्रवेश करता है।

कायोत्सर्ग के दो भेद वर्णन किए गए है - द्रव्य व भाव : द्रव्य से काया को ठाणेणं-एक स्थान पर स्थिर करते है। मोणेणं -मौन हो जाते है, यह द्रव्य कायोत्सर्ग हुआ। भाव कायोत्सर्ग में जीव अपने जीव का ध्यान करते हुए, अपने जीव में स्थित होता है, उसे 'झाणेणं' कहते है। यह धर्म ध्यान से प्रारम्भ होकर शुक्ल ध्यान में पूर्ण होता है। सोऽहं की साधना से ध्यान में प्रवेश करते है। आवश्यकता लगने पर आत्म गुणों का चिंतन व अन्त में शून्य अवस्था, निर्विचार अवस्था, शुक्ल ध्यान में साधक प्रवेश करता है। इसे भाव कायोत्सर्ग वीतराग सामायिक साधना कहते हैं। (शेष पृष्ठ 4 में)

अध्यक्षीय

संयम की साधना से प्रकृति संरक्षण तक : समय की मांग

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

जब तक 'जैन प्रकाश' का यह अंक आपके हाथों में पहुँचेगा, तब तक आत्मज्ञानी, ध्यानयोगी, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज के पावन दीक्षा दिवस (17 मई 1972) का पुण्य प्रसंग श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सम्पन्न हो चुका होगा। यह अवसर केवल एक ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि संयम, साधना और आत्मकल्याण की उस दिव्य परंपरा का स्मरण है, जिसने अनगिनत आत्माओं को धर्ममार्ग पर प्रेरित किया है।

पूज्य आचार्यश्री का समग्र जीवन त्याग, अनुशासन, ध्यान और आध्यात्मिक चेतना की उज्ज्वल साधना रहा है। उन्होंने अपने ज्ञान, तप और गंभीर चिंतन से न केवल श्रमण संघ को नई दिशा प्रदान की, बल्कि समाज में नैतिकता, आत्मसंयम और आध्यात्मिक मूल्यों की सुदृढ़ स्थापना का भी महनीय कार्य किया। उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि बाहरी उपलब्धियों से अधिक महत्वपूर्ण आत्मिक उन्नति और जीवन की आंतरिक पवित्रता है।

आज जब भौतिकता की अंधी दौड़ मनुष्य को अशांत और असंतुलित बना रही है, तब पूज्य आचार्यश्री का संयममय जीवन और ध्यानमयी साधना मानवता के लिए एक प्रकाश स्तंभ के समान प्रतीत होती है। उनके आदर्श हमें सिखाते हैं कि संयम केवल साधु जीवन का विषय नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए संतुलित और सार्थक जीवन जीने की आधारभूमि है।

इसी क्रम में जून माह में आने वाला विश्व पर्यावरण दिवस भी हमें प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों का स्मरण कराता है। जैन दर्शन का मूल स्वर ही अहिंसा, सह-अस्तित्व और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति-इन सभी में जीवन की अनुभूति को स्वीकार करने वाला जैन दर्शन विश्व को पर्यावरण संतुलन का सबसे वैज्ञानिक और संवेदनशील दृष्टिकोण प्रदान करता है।

आज प्रकृति अनेक संकटों से गुजर रही है। प्रदूषण, जल संकट, अत्यधिक उपभोग और प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन मानव जीवन के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है। ऐसे समय में जैन समाज का यह दायित्व बनता है कि वह अपने सिद्धांतों-अपरिग्रह, संयम और जीवदया-को व्यवहार में उतारते हुए पर्यावरण संरक्षण का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करे।

मैं जैन कॉन्फ्रेंस की समस्त प्रांतीय शाखाओं, महिला एवं युवा इकाइयों तथा समाज बंधुओं से विशेष आग्रह करता हूँ कि वे वृक्षारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता और प्लास्टिक मुक्त अभियान जैसे कार्यक्रमों को सामाजिक चेतना से जोड़ें। यदि हम अपने जीवन में सादगी और संयम को अपनाएँ, तो वही पर्यावरण सुरक्षा की सबसे बड़ी साधना होगी।

आइए, पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणाओं को आत्मसात् करते हुए हम ऐसा समाज निर्मित करें, जहाँ आत्मशुद्धि के साथ प्रकृति संरक्षण की भावना भी समान रूप से विकसित हो। यही समय का संदेश है, यही मानवता का धर्म है और यही आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा उत्तरदायित्व भी।

सम्पादकीय

न्याय की गूंज : राजस्थान हाईकोर्ट का निर्णय और जैन संस्थानों की सामाजिक-आध्यात्मिक पहचान

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर द्वारा श्री महावीर साधना संस्थान से जुड़े प्रकरण में दिया गया हालिया निर्णय केवल एक न्यायिक आदेश नहीं, बल्कि भारतीय समाज की बहुलतावादी चेतना, संवैधानिक मूल्यों और सामाजिक-धार्मिक सहअस्तित्व की एक सशक्त पुनर्पुष्टि है। यह निर्णय उन हजारों सामाजिक संस्थानों के लिए आशा, विश्वास और न्याय का संदेश लेकर आया है, जो सेवा, संस्कार और आध्यात्मिकता को साथ लेकर समाज के बीच कार्य कर रहे हैं।

जयपुर के इस प्रकरण ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न को जन्म दिया था-क्या सामाजिक सेवा के लिए आवंटित किसी संस्थान परिसर में धार्मिक प्रतीकों, प्रतिमाओं, स्वाध्याय गतिविधियों अथवा आध्यात्मिक आयोजनों की उपस्थिति उसके सार्वजनिक स्वरूप को प्रभावित करती है? निचली अदालतों के निर्णयों ने इस प्रश्न को विवाद का रूप दिया, किंतु राजस्थान हाईकोर्ट ने अपने संतुलित और दूरदर्शी दृष्टिकोण से इस भ्रम को दूर कर दिया।

माननीय न्यायमूर्ति श्री समीर जैन ने अपने निर्णय में जिस व्यापक संवैधानिक समझ का परिचय दिया, वह निश्चय ही सराहनीय है। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि यदि कोई परिसर समाज के सभी वर्गों के लिए खुला है, वहाँ जनकल्याणकारी गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं, और उसका मूल उद्देश्य सार्वजनिक सेवा है, तो मात्र धार्मिक प्रतीकों या आध्यात्मिक गतिविधियों के आधार पर उसे किसी एक धर्म विशेष का सीमित केंद्र नहीं माना जा सकता।

यह निर्णय इसलिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि देशभर में जैन समाज के अनेक संस्थान ऐसे हैं जिन्हें राज्य सरकारों, विकास प्राधिकरणों अथवा स्थानीय निकायों द्वारा सामाजिक उपयोग, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार और सामुदायिक गतिविधियों के लिए भूमि आवंटित की गई थी। समय के साथ इन परिसरों में सामायिक भवन, स्वाध्याय भवन, स्थानक, ध्यान केंद्र अथवा तीर्थंकर प्रतिमाओं की स्थापना हुई। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि जैन परंपरा में सेवा और साधना कभी एक-दूसरे से पृथक नहीं रही।

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का स्पष्ट मत है कि जैन संस्थान केवल धार्मिक गतिविधियों के केंद्र नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के जीवंत केंद्र हैं। यहाँ योग है, स्वास्थ्य है, संस्कार हैं, अध्ययन है, सामाजिक सहयोग है, करुणा है और सबसे बढ़कर-मानवता की सेवा का भाव है। यदि ऐसे संस्थानों में आध्यात्मिक प्रतीक भी विद्यमान हैं, तो वे उनकी सामाजिक उपयोगिता को सीमित नहीं करते, बल्कि उनकी आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। (शेष पृष्ठ 4 में)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

जैन कॉन्फ्रेंस के मुखपत्र जैन प्रकाश का साप्ताहिक समाचार पत्र के स्वरूप में प्रकाशित किए जाने के अवसर पर विशेष आलेख

जैन पत्रकारिता का गौरवशाली स्तंभ : 'जैन प्रकाश' का इतिहास, राष्ट्रीय योगदान और समकालीन प्रासंगिकता

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन, मुख्य संपादक-जैन प्रकाश

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास केवल राजनीतिक आंदोलनों और सामाजिक परिवर्तनों का इतिहास नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक संवेदना और नैतिक मूल्यों का भी इतिहास है। इस व्यापक परंपरा में जैन पत्रकारिता का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट रहा है। जैन समाज ने सदैव विचार, संयम, संवाद, अहिंसा और नैतिकता को जीवन का आधार माना है, इसलिए जैन समाज में पत्रकारिता केवल समाचारों का माध्यम नहीं रही, बल्कि वह समाज-निर्माण, आत्मजागरण और सांस्कृतिक संरक्षण का अभियान बन गई। इसी गौरवशाली परंपरा का सबसे उज्ज्वल और दीर्घजीवी स्तंभ है- 'जैन प्रकाश'।

जैन पत्रकारिता की चेतना और 'जैन प्रकाश' का उद्भव : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की स्थापना सन् 1906 में हुई। उस समय देश अंग्रेजी शासन के अधीन था और भारतीय समाज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक चुनौतियों से गुजर रहा था। स्थानकवासी जैन समाज के मनीषियों ने अनुभव किया कि संगठन की विचारधारा, धार्मिक चेतना, सामाजिक गतिविधियों तथा राष्ट्रीय जागरण को समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए एक अधिकृत मुखपत्र आवश्यक है। इसी आवश्यकता की परिणति आगे चलकर 'जैन प्रकाश' के रूप में हुई। प्रारंभिक काल में यह गुजराती एवं हिंदी भाषाओं में प्रकाशित हुआ और समय के साथ कभी साप्ताहिक, कभी पाक्षिक तथा कभी पत्रिका के रूप में निरंतर समाज का मार्गदर्शन करता रहा।

आज सौ वर्षों से अधिक समय व्यतीत हो जाने के बाद भी 'जैन प्रकाश' का सतत् प्रकाशित होना भारतीय धार्मिक पत्रकारिता के इतिहास में एक असाधारण उपलब्धि है। वर्तमान समय में यह पुनः साप्ताहिक हिंदी समाचार-पत्र के रूप में प्रकाशित हो रहा है और समाज में नई वैचारिक ऊर्जा का संचार कर रहा है।

'जैन प्रकाश' केवल पत्र नहीं, समाज की जीवित धरोहर : 'जैन प्रकाश' के पुराने अंक आज देश के अनेक अभिलेखागारों, निजी संग्रहों और समाज के विशिष्ट परिवारों के पास एक अमूल्य धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। यह केवल कागज के पुराने पृष्ठ नहीं हैं, बल्कि वे स्थानकवासी जैन समाज की जीवंत स्मृतियाँ हैं।

इन अंकों के माध्यम से उस समय के समाज की धार्मिक गतिविधियाँ, साधु-साध्वियों की आचार-पद्धति, विहार-परंपरा, स्थानकों के निर्माण, समाज-सुधार अभियानों और वैचारिक आंदोलनों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। जैन समाज के इतिहास के शोधार्थियों के लिए 'जैन प्रकाश' के पुराने अंक आज प्राथमिक स्रोत सामग्री के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

वास्तव में, यदि बीते हुए सौ वर्षों के स्थानकवासी समाज की वैचारिक यात्रा को समझना हो, तो 'जैन प्रकाश' उसके सबसे प्रामाणिक दर्पण के रूप में सामने आता है।

स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीय चेतना में योगदान : 'जैन प्रकाश' ने केवल धार्मिक समाचारों तक स्वयं को सीमित नहीं रखा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में इस पत्र ने राष्ट्रीय चेतना, स्वदेशी भावना और सामाजिक जागरण को भी स्वर प्रदान किया। उस समय की अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ, राष्ट्रीय विचार और सामाजिक आंदोलनों की जानकारी समाज तक इसी पत्र के माध्यम से पहुँची।

"जब देश स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था, तब जैन समाज भी अपनी धार्मिक मर्यादाओं के भीतर रहते हुए राष्ट्रीय चेतना के साथ खड़ा था। 'जैन प्रकाश' ने समाज को यह संदेश दिया कि धर्म और राष्ट्रभाव परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।"

महात्मा गांधी और राष्ट्रीय विचारकों का वैचारिक मंच : 'जैन प्रकाश' की एक विशेष उपलब्धि यह भी रही कि इसमें समय-समय पर देश के सुप्रसिद्ध लेखकों, चिंतकों और सामाजिक विचारकों के आलेख प्रकाशित होते रहे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार, अहिंसा की अवधारणा और नैतिक जीवन के संदेशों को भी इस पत्र ने समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गांधी स्वयं जैन दर्शन की अहिंसा और अपरिग्रह की भावना से प्रभावित थे। 'जैन प्रकाश' ने गांधीवादी चिंतन और जैन दर्शन के नैतिक आदर्शों के बीच एक वैचारिक सेतु का कार्य किया। इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों, आचार्यों, समाज-सुधारकों और साहित्यकारों के लेखों ने इस पत्र को केवल सामुदायिक समाचार-पत्र नहीं रहने दिया, बल्कि इसे राष्ट्रीय वैचारिक संवाद का मंच बना दिया।

श्रमण संघ और वैचारिक एकता में 'जैन प्रकाश' की भूमिका : स्थानकवासी समाज के इतिहास में श्रमण संघ की स्थापना एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय है। जैन कॉन्फ्रेंस के प्रयासों से सन् 1956 में स्थापित इस ऐतिहासिक संगठन ने विभिन्न परंपराओं और सम्प्रदायों के साधु - साध्वियों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया।

इस महान प्रयास में 'जैन प्रकाश' ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पत्र ने केवल समाचार प्रकाशित नहीं किए, बल्कि वैचारिक सामग्री, संगठनात्मक दृष्टि और समन्वयकारी चिंतन के माध्यम से पूरे देश में एकता और संवाद का वातावरण निर्मित किया। विभिन्न सम्प्रदायों के संतों के विचार, विहार समाचार, आध्यात्मिक प्रवचन और संगठनात्मक निर्णय 'जैन प्रकाश' के माध्यम से समाज तक पहुँचते रहे। इस प्रकार यह पत्र केवल सूचना का माध्यम नहीं रहा, बल्कि स्थानकवासी समाज की वैचारिक एकता का संवाहक बन गया।

मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता की अनुपम परंपरा : आज जब पत्रकारिता का एक बड़ा भाग बाजारवाद, सनसनी और तात्कालिक लोकप्रियता की प्रवृत्तियों से प्रभावित दिखाई देता है, तब 'जैन प्रकाश' ने संयमित, मर्यादित और मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता की परंपरा को जीवित रखा है।

इस पत्र ने कभी भी कटुता, विभाजन या उत्तेजना को स्थान नहीं दिया। इसके मूल में सदैव सत्य, समाजहित, नैतिकता, धर्मचेतना और संगठनात्मक समरसता की भावना रही है। 'जैन प्रकाश' की यही विश्वसनीयता उसे स्थानकवासी जैन समाज का सर्वाधिक प्रसारित और सर्वाधिक विश्वसनीय पत्र बनाती है। समाज आज भी इसकी प्रत्येक पंक्ति को गंभीरता से पढ़ता और विचार का आधार मानता है।

वर्तमान समय में 'जैन प्रकाश' की प्रासंगिकता : डिजिटल युग में जहाँ सूचनाओं की बाढ़ है, वहीं सत्य और विश्वसनीयता का संकट भी उतना ही गहरा हुआ है। ऐसे समय में 'जैन प्रकाश' का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यह केवल समाचार नहीं देता, बल्कि समाज को दिशा देता है। यह नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति, संत - परंपरा और संगठनात्मक मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि 'जैन प्रकाश' के पुराने अंकों का डिजिटलीकरण हो, उनका अभिलेखीकरण किया जाए तथा उन्हें शोधार्थियों और युवा पीढ़ी के लिए उपलब्ध कराया जाए। क्योंकि यह केवल जैन समाज की धरोहर नहीं, बल्कि भारत की धार्मिक - सामाजिक पत्रकारिता के इतिहास की भी अमूल्य निधि है।

(शेष पृष्ठ 6 में)

कथा-कहानी | योगिराज की कहानियाँ - प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

परम ज्ञान का चश्मा

एक युवक संन्यासी बन गया। गुरु ने उसके ज्ञान का नेत्र उघड़ा या नहीं इसकी परीक्षा लेने के लिए नगर में भिक्षा लेने के लिए भेज दिया। युवक भिक्षु रीते हाथ लौट आया। उसका मन बड़ा निराश हुआ। पूरे नगर में घूमा-फिरा पर किसी ने उसे भिक्षा नहीं दी थी।

गुरु ने पूछा - भिक्षु, तुम उदास भी हो और निराशा भी तुम्हारे चेहरे से झलक रही है। क्या कारण है?

युवक भिक्षु ने कहा - गुरु जी पूरे नगर में घूमा-फिरा किन्तु किसी ने भी भिक्षा नहीं दी।

गुरु ने उसे एक चश्मा दिया। कहा - इसे लगाकर जाओ। सच्चे मनुष्य से भिक्षा लेना। किसी ऐरे-गैरे से मत लेना।

शिष्य ने गुरु का दिया चश्मा पहना और घूमने लगा। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, कि बाजार में घूम रहे, घरों में रह रहे सभी मनुष्य देह से तो मनुष्य हैं परन्तु उनकी गर्दनें कुत्ते, बिल्ली, सांप और चीतों जैसी हैं। इसीलिए कोई लड़ रहा है, कोई किसी को काट रहा है। उसे एक भी सच्चा इंसान दिखाई नहीं दिया। इस दिन भी वह खाली हाथ लौट आया।

गुरु ने फिर प्रश्न किया - तुम आज भी खाली हाथ लौटे हो। तुम्हें कहीं सच्चा इंसान दिखाई नहीं दिया।

नहीं गुरु जी! सच्चा इंसान नहीं दिखाई पड़ा। मैं किससे भिक्षा लेता?

गुरु बोले - आज फिर नगर में जाओ। ध्यानपूर्वक देखना। मनुष्य की एक ही जाति होती है और वह जाति है मनुष्यता। मनुष्यता देखो, उसी से भिक्षा मांग सकते हो।

युवक भिक्षु बेचारा पिछले दो दिन से भूखा नगर में घूमा-फिरा था। बोला-गुरु जी दो दिन हो गए भूखा ही लौट आना पड़ता है। अब आप कहते हैं तो आज फिर देखता हूँ कोई मनुष्यता की विशेषता रखने वाला मिल गया तो?

युवक भिक्षु तीसरे दिन फिर नगर में गया। सारा नगर घूमा-फिरा। निराश हो गुरु के पास लौट रहा था। भिक्षु को एक मोची ने आते देखा। वह जूते गांठ रहा था, उठ खड़ा हुआ। पहले उसने युवक साधु के चरण स्पर्श किये। फिर बोला - महात्मा जी आप भूखे होंगे। चलिए मैं आपको सामने ढाबा है भोजन करा देता हूँ। मैं अपनी कमाई में से भोजन कराऊंगा। भिक्षु, मोची के साथ भोजन करने जाने को राजी हो गया। मोची ने सुबह से लगकर एक जोड़ी जूता तैयार किया था, उसे अपने स्थान पर रख वह उसके साथ चल पड़ा। रास्ते में सोचता जा रहा था आज यह जूता बिकेगा तो इसके पैसे मैं नहीं रखूंगा। साधु को भोजन कराऊंगा और शेष बचे पैसे इस साधु को दक्षिणा स्वरूप दे दूँगा।

ढाबे में साधु के लिए सम्मानपूर्वक भोजन कराने का आदेश देकर मोची अपने स्थान पर आ बैठा। इसी बीच नगर का राजा उधर से गुजरा। उसकी निगाह मोची के बनाए जूतों पर पड़ी। वह जूते देखकर मुग्ध हो गया। उसने मोची से जूते लेकर पहन लिये और अपने सेवकों को एक लाख चांदी के रुपये देने को कहा। थोड़ी देर में गाड़ी में भरकर रुपये आ गये। मोची ने वे रुपये साधु को ले जाने को कहा। साधु ने रुपये लेने से इंकार कर दिया। तब मोची बोला - मैंने फैसला कर लिया था - आज बनाए जूतों की कीमत मैं आपको दे दूँगा, सो मैं तो इन्हें ले ही नहीं सकता। मोची अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ था। अंत में वे रुपये दोबारा से राजकोष में जमा कर दिये गए।

युवक भिक्षु तीसरे दिन प्रसन्न मुद्रा में गुरु के पास पहुंचा। गुरु ने पूछा मनुष्यता की विशेषता रखने वाला कोई भक्त मिला क्या?

चेले ने सारी आपबीती कह सुनाई। तब गुरु बोले - वत्स, तुम अब भी अज्ञान में हो। तुम मेरा चश्मा लगा कर भी देखने में एक भूल कर रहे हो। वह भक्त मात्र मनुष्यता सम्पन्न भक्त था; मोची नहीं। तुम अब भी उसे मनुष्य न कह कर मोची कह रहे हो। मनुष्यों की कोई जाति नहीं होती। मनुष्य केवल मनुष्य होता है। मनुष्य को जिस दिन तुम मनुष्य देखने लगोगे उसी दिन सच्चे अर्थों में तुम शिष्य बन पाओगे। मनुष्य मात्र मनुष्य है। जातिवाद के घेरे में बांट कर उसे विभाजित मत करो।

लंदन के वेलकम कलेक्शन ने जैन समुदाय को 2,000 पांडुलिपियाँ लौटाईं

असामान्य रूप से, इन वस्तुओं को उनके मूल देश में नहीं बल्कि यूके इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी को बर्मिंघम विश्वविद्यालय में जमा करने के लिए भेजा जाएगा। लंदन स्थित वेलकम कलेक्शन उन 2,000 पांडुलिपियों को लौटाने जा रहा है जिन्हें 1919 में पाकिस्तान में स्थित एक जैन मंदिर से 'कम कीमत' पर प्राप्त किया गया था। यह दक्षिण एशिया के बाहर जैन पांडुलिपियों का सबसे बड़ा समूह है। औपचारिक हस्तांतरण के लिए समझौता ज्ञापन पर आज शाम हाउस ऑफ कॉमन्स में हस्ताक्षर किए जा रहे हैं।

एक असामान्य व्यवस्था के तहत, यह राशि मूल देश को नहीं, बल्कि ब्रिटेन की संस्था इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी को बर्मिंघम विश्वविद्यालय में जमा करने के लिए दी जाएगी। यह बात शायद आश्चर्यजनक लगे, क्योंकि ब्रिटेन में केवल 60,000 जैन हैं और भारत में 60 लाख, लेकिन 1947 में भारत के विभाजन के बाद दक्षिण एशिया में जैन समुदाय की स्थिति बहुत कठिन हो गई थी।

चित्र : वेलकम कलेक्शन, लंदन के सौजन्य से

जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है जो आध्यात्मिक पवित्रता और सभी जीवित प्राणियों के प्रति अहिंसा पर बल देता है। जिस क्षेत्र से ये पांडुलिपियाँ प्राप्त हुई थी, वह विभाजन के समय पाकिस्तान का हिस्सा बन गया। पाकिस्तान में मुस्लिम आबादी अधिक होने के कारण, उथल-पुथल से बचे लगभग सभी जैनियों को भारत भागने के लिए मजबूर होना पड़ा।

आज पाकिस्तान में जैन धर्म के अनुयायी लगभग न के बराबर रह गए हैं-इसलिए वहाँ वेलकम पांडुलिपियों के लिए कोई उपयुक्त भंडारगृह भी नहीं है। भारत में जैन समुदाय बिखरा हुआ है और इस संग्रह की देखभाल के लिए कोई स्पष्ट संस्था मौजूद नहीं है।

जैन पांडुलिपियाँ वेलकम संग्रहालय तक कैसे पहुंचीं? : लंदन में मौजूद जैन पांडुलिपियों को 1919 में हेनरी वेलकम ने अधिग्रहित किया था, जिन्होंने अपने दवा व्यवसाय से अपार धन कमाया था। उन्होंने विश्वभर से स्वास्थ्य और चिकित्सा से संबंधित वस्तुओं और दस्तावेजों का विशाल संग्रह किया था। इनमें से अधिकांश वस्तुएं बाद में विज्ञान संग्रहालय को दे दी गईं, लेकिन लंदन के यूस्टन रोड स्थित वेलकम संग्रह में अभिलेखीय सामग्री और कलाकृतियाँ सुरक्षित हैं, जहाँ वे अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं।

वेलकम संग्रहालय में संग्रहित 2,000 जैन पांडुलिपियों में से लगभग 1,200 पांडुलिपियाँ पंजाब क्षेत्र के एक अज्ञात मंदिर से प्राप्त हुई थी, जिसका नाम अधिग्रहण दस्तावेजों में पटली के रूप में दर्ज है। इस नाम के कई गाँव या कस्बे हैं, लेकिन वहाँ कोई जैन मंदिर नहीं मिल सका। शेष 800 पांडुलिपियाँ वर्तमान पाकिस्तान में स्थित विभिन्न अज्ञात स्रोतों से प्राप्त हुई थी। कुछ पांडुलिपियाँ अभी भी 1919 के उन समाचार पत्रों में लिपटी हुई हैं जिनमें परिवहन के दौरान उन्हें सुरक्षा के लिए रखा गया था।

1919 में वेलकम के भारतीय एजेंट, पायरा मॉल ने इस अधिग्रहण के बारें में बहुत कम जानकारी दी, लेकिन वेलकम संग्रह के संग्रह प्रमुख, एड्रियन प्लाउ ने स्वीकार किया कि पांडुलिपियों को 'कम कीमत पर और उनके मूल मालिकों के हितों के विरुद्ध' खरीदा गया था। उस समय के पत्राचार से पता चलता है कि इन्हें 5 रुपये प्रति पांडुलिपि के हिसाब से खरीदा गया था (उस समय 15 रुपये 1 पाउंड के बराबर थे, हालांकि जाहिर है कि मुद्रास्फीति के कारण उस समय इनकी कीमत आज की तुलना में कहीं अधिक थी)।

यूके इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी के ट्रस्टी मेहूल संघराजका, जिन्होंने वेलकम की सामग्री के हस्तांतरण की व्यवस्था करने में मदद की है, स्वीकार करते हैं कि विभाजन के समय की उथल-पुथल में 'इनमें से कुछ पांडुलिपियाँ नष्ट हो गई होंगी'। 1947 में विभाजन के बाद की भयावह घटनाओं में जैन संस्कृति का अधिकांश हिस्सा खो गया या नष्ट हो गया। इसलिए संघराजका 'वेलकम द्वारा इन ग्रंथों की देखभाल और सम्मान दिलाने के लिए आभारी हैं'।

2,000 पांडुलिपियों में से लगभग आधी का संबंध स्वास्थ्य से है। इनमें 16वीं शताब्दी के आरम्भ की एक महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ, कल्पसूत्र की सचित्र प्रति से लेकर 19वीं शताब्दी के दस्तावेज शामिल हैं। संग्रह में संभवतः प्रारंभिक हिंदी में लिखी गई पहली चिकित्सा कृति की सबसे पुरानी जीवित प्रति भी शामिल है, जो 1592 की है। दस्तावेज मुख्य रूप से प्राकृत में लिखे गए हैं, लेकिन कुछ अन्य दक्षिण एशियाई भाषाओं में भी हैं। इन्हें वर्तमान में सौ से अधिक अभिलेख बक्सों में संग्रहित किया गया है।

ये पांडुलिपियाँ बर्मिंघम सेंटर ऑफ जैन स्टडीज को सौंपी जाएंगी, जिसकी स्थापना 2023 में बर्मिंघम विश्वविद्यालय में हुई थी। वेलकम के एक प्रवक्ता का कहना है कि यह 'समुदाय की पहुँच को अधिकतम करने, अनुसंधान के अवसरों को बढ़ाने और इस महत्वपूर्ण संग्रह के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है।'

अब औपचारिकताओं को आगे बढ़ाया जाएगा, जिसके तहत वेलकम कलेक्शन के गवर्नर्स और चौरिटी कमीशन से संग्रह से अलग करने की अनुमति मांगी जाएगी। भौतिक स्थानांतरण की प्रक्रिया इस वर्ष शुरू हो रही है और इसमें कई वर्ष लग सकते हैं।

वेलकम संग्रह में अन्य संस्कृतियों की पांडुलिपियों का विशाल भंडार है, जिसमें लगभग 2,65,000 वस्तुएं शामिल हैं। प्लाउ का कहना है कि सामग्री के संभावित हस्तांतरण के संबंध में कुछ अन्य संस्थानों के साथ निजी बातचीत चल रही है। संघराजका जैन अधिग्रहण को एक संभावित मॉडल के रूप में भी देखते हैं: 'वस्तुओं को लौटाना हमेशा कठिनाइयों से भरा होता है, लेकिन यह देखना महत्वपूर्ण है कि इसका समुदायों और शिक्षा जगत पर सकारात्मक प्रभाव कैसे पड़ सकता है।'

(समाचार सौजन्य - डॉ. अमितराय जैन)

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 19

मन से शरीर तक ऊर्जा का प्रवाह (गहन विस्तार)

अब तक हमने प्रमाद, अहंकार, कर्ताभाव और उसकी सूक्ष्म परतों को समझा। अब हम एक और महत्वपूर्ण आयाम में प्रवेश करते हैं-ऊर्जा का आयाम। जो मन में होता है, वह शरीर में उतरता है। जो शरीर में जमता है, वह पुनः मन को प्रभावित करता है। यह द्वि-दिशात्मक प्रवाह समझे बिना प्रमाद की पूरी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं होती।

1. विचार केवल विचार नहीं हैं : हम अक्सर सोचते हैं कि विचार सिर्फ मानसिक घटनाएँ हैं। परंतु हर विचार एक ऊर्जा-तरंग है। हर भावना शरीर में एक रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। हर भय शरीर को सतर्क कर देता है। इसलिए मन और शरीर अलग नहीं हैं। वे एक ही ऊर्जा के दो स्तर हैं।

2. भाव से शरीर तक : जब भय उठता है, तो नाभि में कसाव आता है। जब नियंत्रण की जिद उठती है, तो छाती कठोर हो जाती है। जब आहत अहंकार सक्रिय होता है, तो गला भारी हो सकता है। जब निराशा आती है, तो कंधे झुक जाते हैं। यह सब संयोग नहीं है। यह ऊर्जा का प्रवाह है।

3. ऊर्जा की दिशा : सामान्यतः जब व्यक्ति अत्यधिक सोचता है, तो ऊर्जा सिर में केंद्रित हो जाती है। विचारों की अधिकता ऊर्जा को ऊपर खींच लेती है। पर जब व्यक्ति श्वास के साथ नाभि की ओर ध्यान लाता है, तो ऊर्जा संतुलित होने लगती है। ऊपर का दबाव कम होता है। नीचे स्थिरता बढ़ती है।

4. Fight-or-Flight और ऊर्जा : जब मन खतरा अनुभव करता है, तो शरीर तुरंत प्रतिक्रिया करता है। हृदय गति बढ़ती है। श्वास उथली हो जाती है। मांसपेशियाँ सख्त हो जाती हैं। यह ऊर्जा का तीव्र सक्रिय होना है। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहे, तो शरीर में सूजन, तनाव और थकान उत्पन्न हो सकती है। यह दीर्घकालीन प्रमाद का जैविक आधार है।

5. ऊर्जा की गांठें : जब कोई भावना लंबे समय तक दबी रहती है, तो वह शरीर में एक "गांठ" की तरह जम सकती है। छाती में दबाव। पेट में भारीपन। गले में रुकावट। ये केवल शारीरिक लक्षण नहीं हैं। ये भावनात्मक ऊर्जा के जमाव के संकेत हैं।

6. श्वास-सेतु : श्वास मन और शरीर के बीच सेतु है। विचार सीधे नियंत्रित नहीं होते। पर श्वास को देखा जा सकता है। जब श्वास गहरी होती है, तो शरीर को संकेत मिलता है कि खतरा समाप्त है। धीरे-धीरे मन भी शांत होने लगता है।

7. नाभि का महत्व : नाभि शरीर का गुरुत्व केंद्र है। यह स्थिरता का बिंदु है। जब ध्यान सिर से उतरकर नाभि में आता है, तो ऊर्जा संतुलित होती है। असुरक्षा कम होती है। कर्ताभाव ढीला पड़ता है। नियंत्रण की जिद नरम होती है।

8. शरीर को सुनना : यदि व्यक्ति सजग होकर शरीर को सुनना सीख ले, तो प्रमाद प्रारंभ में ही पहचाना जा सकता है। छाती कस रही है-शायद नियंत्रण बढ़ गया है। नाभि तनी है-शायद भय सक्रिय है। गला भारी है-शायद कुछ अनकहा है। यह सुनना ही उपचार है।

9. ऊर्जा का पुनर्संतुलन : ऊर्जा संतुलित होती है-गहरी श्वास से नाभि में स्थिरता से वर्तमान में उपस्थित रहने से अनुभव को स्वीकार करने से दमन से नहीं। भागने से नहीं।

10. अंतिम स्पष्टता : मन और शरीर अलग नहीं हैं। प्रमाद केवल मानसिक नहीं है। वह ऊर्जा के असंतुलन का परिणाम भी है। जब सजगता मन में आती है और श्वास शरीर में संतुलन लाती है, तो ऊर्जा पुनः प्रवाहित होने लगती है और वहीं से आगे हम समझेंगे-छाती की जकड़न कैसे नियंत्रण का केंद्र बन जाती है।

❀❀❀

(क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला

डॉ. हेन्रिक जिम्मर द्वारा जैन साहित्य की वैश्विक प्रतिष्ठा

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

भारतीय दर्शन, अध्यात्म और सांस्कृतिक चेतना को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने में अनेक यूरोपीय विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन विद्वानों ने केवल भारत का अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि भारतीय ज्ञान-परंपराओं को आधुनिक अकादमिक विमर्श का हिस्सा बनाकर उन्हें वैश्विक पहचान दिलाई। जैन धर्म और जैन साहित्य के संदर्भ में जर्मनी के महान दार्शनिक एवं भारतीय संस्कृति के अध्येता डॉ. हेन्रिक जिम्मर का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने शोध, लेखन और तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि जैन धर्म भारतीय सभ्यता की सबसे प्राचीन, स्वतंत्र और मौलिक आध्यात्मिक परंपराओं में से एक है।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में जब यूरोप में भारत के प्राचीन ग्रंथों, दर्शन और धर्मों के अध्ययन की एक नई लहर उठ रही थी, तब डॉ. हेन्रिक जिम्मर ने भारतीय दर्शन को केवल धार्मिक आस्था के रूप में नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के बौद्धिक विकास के रूप में समझने का प्रयास किया। विशेष रूप से जैन दर्शन के प्रति उनका आकर्षण इसलिए था क्योंकि इसमें अहिंसा, आत्मानुशासन, तप, अपरिग्रह और आत्मशुद्धि जैसे ऐसे सार्वभौमिक सिद्धांत मौजूद थे, जो आधुनिक मानवता के लिए भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

डॉ. जिम्मर का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने उस प्रचलित पश्चिमी धारणा को चुनौती दी जिसमें जैन धर्म को बौद्ध धर्म के समानांतर या हिंदू धर्म की किसी शाखा के रूप में देखा जाता था। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जैन धर्म एक स्वतंत्र श्रमण परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी जड़ें वैदिक संस्कृति से भी पूर्व तक जाती हैं। यह विचार उस समय अत्यंत क्रांतिकारी माना गया, क्योंकि इससे जैन धर्म की ऐतिहासिक प्राचीनता और स्वतंत्र पहचान को अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक जगत में नई मान्यता मिली।

Indus Valley Civilization के पुरातात्विक अवशेषों का अध्ययन करते हुए जिम्मर ने सिंधु सभ्यता की मुद्राओं और योगमुद्राओं की तुलना जैन परंपरा की कायोत्सर्ग साधना से की। उनका मानना था कि भारतीय उपमहाद्वीप में तप, ध्यान और आत्मसंयम की जो धारा दिखाई देती है, उसका गहरा संबंध जैन आध्यात्मिक परंपरा से है। इस प्रकार उन्होंने पुरातत्व, दर्शन और सांस्कृतिक अध्ययन को जोड़कर जैन धर्म की प्राचीनता को एक नया अकादमिक आधार प्रदान किया।

डॉ. जिम्मर की प्रसिद्ध कृति 'Philosophies of India' जैन दर्शन के अध्ययन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण ग्रंथ मानी जाती है। इस पुस्तक में उन्होंने जैन दर्शन को भारतीय चिंतन की मूलधारा के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्य Joseph Campbell ने इस ग्रंथ का संपादन कर उसे प्रकाशित कराया, जिसके माध्यम से जैन धर्म और जैन साहित्य पश्चिमी विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों तक पहुँचा।

यदि भारतीय विद्वानों ने जैन आगम, प्राकृत साहित्य और तत्त्वचिंतन की परंपरा को संरक्षित रखा, तो डॉ. हेन्रिक जिम्मर जैसे यूरोपीय विद्वानों ने उसे विश्व समुदाय तक पहुँचाने का कार्य किया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जैन धर्म की वैश्विक अकादमिक प्रतिष्ठा के निर्माण में यूरोप के ऐसे विद्वानों का योगदान एक सेतु के समान रहा है।

आज जब जैन समाज अपनी प्राचीन विरासत, साहित्य और दर्शन को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास कर रहा है, तब डॉ. हेन्रिक जिम्मर जैसे विदेशी मनीषियों का स्मरण यह प्रेरणा देता है कि सत्य, अहिंसा और आत्मज्ञान की यह परंपरा केवल भारत की धरोहर नहीं, बल्कि समस्त मानवता की साझा बौद्धिक संपदा है।

परिपक्वता का वास्तविक सौंदर्य

- डॉ. सुधीर जैन, राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस

एक बार एक शिष्य ने अपने गुरु से पूछा-'गुरुदेव, मनुष्य की वास्तविक परिपक्वता की पहचान क्या है?' गुरुदेव उसे बगीचे में ले गए। वहाँ दो वृक्ष थे-एक वृक्ष पर कच्चे फल लगे थे, जो कठोर थे, ऊँचाई पर अकड़कर खड़े थे। दूसरे वृक्ष पर पके हुए फल लगे थे, जो मधुर और कोमल थे तथा भार के कारण विनम्र होकर नीचे झुक गए थे। गुरुदेव मुस्कुराए और बोले 'वत्स, यही जीवन का सत्य है। जो मनुष्य भीतर से परिपक्व होता है, वह अहंकार से ऊपर उठकर विनम्र हो जाता है। उसकी वाणी में कठोरता नहीं, मधुरता होती है और उसके चेहरे पर आत्मविश्वास एवं शांति का तेज दिखाई देता है।' जैन दर्शन भी यही सिखाता है कि ज्ञान का मूल्य शब्दों से नहीं, व्यवहार से प्रकट होता है। जिसके भीतर क्षमा, संयम, सहनशीलता और समता का भाव जागृत हो जाता है, वही सच्चे अर्थों में साधक और परिपक्व कहलाता है। आज अधिकांश विवाद इसलिए बढ़ते हैं क्योंकि हर व्यक्ति स्वयं को सही सिद्ध करना चाहता है। परंतु ज्ञानी वही है जो यह समझ जाए कि हर बात का उत्तर देना आवश्यक नहीं, कई बार मौन सबसे बड़ी साधना बन जाता है। कभी-कभी सही होते हुए भी शांत रह जाना, हार नहीं बल्कि रिश्तों और संस्कारों की विजय होती है। मर्म यही है 'फल जितना अधिक पकता है, उतना ही झुकता है और मनुष्य जितना अधिक परिपक्व होता है, उतना ही विनम्र बनता जाता है।' मधुर वाणी, विनम्र व्यवहार और शांत मन-यही सच्चे धर्म की पहचान है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'वीतराग दर्शन में सामायिक की विधि')

सामायिक में कर्मक्षय कैसे? : अरिहंत परमात्मा फरमाते है - अनंत जन्मों के कर्मों को क्षय करने के लिए प्रायश्चित में शुक्ल ध्यान है। जो नए बंधन रोकता है कर्म क्षय का मार्ग पकड़ते है। अतः सामायिक एक-एक समय से प्रारम्भ होती है आगे-आगे बढ़ते हुए एक घड़ी तक निर्विचार, निर्विकल्प पहुँच जाएं तो जीव अनादि का मिथ्यात्व क्षय करता है। मोहनीय कर्म के एक भेद दर्शन मोहनीय कर्म को क्षय करता है जिसमें साधक मिथ्यात्व मोहनीय, सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय कर्म को क्षय करता है। साथ में अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ क्षय करता है और अगर साधक दो घड़ी लगातार निर्विचार, निर्विकल्प जीव-जीव में स्थित हो जाएं, तो चारित्र मोहनीय कर्म को क्षय कर देता है। घाती कर्मों को क्षय कर केवलज्ञान प्रकट कर लेता है, इतनी क्षमता है सामायिक चारित्र में जो साधक को यथाख्यात चारित्र तक ले जाता है।

इस साधना में काल बाधक नहीं है, अरिहंत कृपा से प्राप्त हुई आत्म ध्यान साधना के धर्म यज्ञ में पहुँचकर साधक वीतराग सामायिक का प्रशिक्षण प्राप्त कर समय अर्थात् आत्मा में स्थिर होकर, वीतरागता की ओर बढ़े। दो घड़ी की सामायिक भी सार्थक होगी, जीवन पर्यन्त की सामायिक भी सार्थक होगी। चार दिवसीय एवं दस दिवसीय धर्म यज्ञ शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के द्वारा, आदिश्वर धम, कुप्पकलां, पंजाब एवं सरस्वती विद्या केन्द्र, नाशिक, महाराष्ट्र में निरन्तर गतिमान है। आप सभी इस धर्मयज्ञ में सहभागी होकर जीवन के एक-एक समय को सार्थक करें।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

एक शोधकर्ता, सामाजिक चिंतक और जैन समाज के कार्यकर्ता के रूप में मेरा यह स्पष्ट मत है कि राजस्थान हाईकोर्ट का यह निर्णय आने वाले समय में पूरे देश के जैन संस्थानों के लिए एक न्यायिक मार्गदर्शक सिद्ध होगा। यह निर्णय उन सभी संस्थाओं को यह विश्वास देता है कि यदि उनका उद्देश्य समाज सेवा है, उनके द्वार सबके लिए खुले हैं, और उनकी गतिविधियाँ जनहित में हैं, तो उनकी सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान कानून के विरुद्ध नहीं, बल्कि संविधान के संरक्षण में है।

जैन दर्शन का मूल सूत्र-'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'-केवल दार्शनिक वाक्य नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का शाश्वत सिद्धांत है। राजस्थान हाईकोर्ट का यह निर्णय इसी सिद्धांत की आधुनिक न्यायिक अभिव्यक्ति प्रतीत होता है। आज आवश्यकता केवल इस निर्णय का स्वागत करने की नहीं, बल्कि इससे प्रेरणा लेने की है। देशभर के जैन संस्थानों को अपने सामाजिक दायित्व, पारदर्शिता, सार्वजनिक सहभागिता और सेवाभाव को और अधिक सशक्त बनाना होगा, ताकि यह सिद्ध होता रहे कि धर्म जब सेवा से जुड़ता है, तब वह समाज के लिए शक्ति बनता है-विवाद का कारण नहीं।

निःसंदेह, जयपुर से उठी यह 'न्याय की गूंज' आने वाले वर्षों में देश के सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थानों को दिशा एवं मार्गदर्शन देने का काम करेगी।

युवा स्वास्थ्य : जीवन की अनमोल पूँजी

– गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

आज के आधुनिक युग में युवाओं का हृदयघात (Heart Attack) जैसी बीमारियों के कारण असमय दुनिया से विदा होना केवल एक चिकित्सा संबंधी आँकड़ा नहीं है, बल्कि एक गहरी सामाजिक त्रासदी है। जब एक युवा प्राण त्यागता है, तो केवल एक जीवन का अंत नहीं होता, बल्कि एक परिवार के सपनों, माता-पिता के बुढ़ापे के सहारे और बच्चों के सुरक्षित भविष्य का अंत हो जाता है। यह रिक्त स्थान ऐसा है जिसे संसार की कोई भी उपलब्धि भर नहीं सकती।

अकास्मिक निधन का प्रभाव : किसी भी ऊर्जावान युवा के आकस्मिक निधन का समाचार समाज को स्तब्ध कर देता है। यद्यपि जीवन और मृत्यु प्रकृति के शाश्वत नियम हैं और ईश्वर की सत्ता सर्वोपरि है, तथापि अपनी जीवनशैली के प्रति लापरवाही बरतकर मौत को आमंत्रण देना बुद्धिमानी नहीं है। जागरूक रहकर और अनुशासन अपनाकर हम ऐसी अनहोनी घटनाओं को टाल सकते हैं।

स्वास्थ्य के रक्षण हेतु अनिवार्य स्तंभ : एक स्वस्थ जीवन जीने के लिए हमें अपनी आदतों में अमूलचूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं: आहार का अनुशासन - हमारी रसोई को पुनः 'स्वास्थ्य की प्रयोगशाला' बनाने का समय आ गया है। जंक फूड, ट्रांस फैट, अत्यधिक नमक और परिष्कृत चीनी हमारे हृदय के शत्रु हैं। इनके स्थान पर प्राकृतिक भोजन, मौसमी फल और अंकुरित अनाज को प्राथमिकता दें।

गतिशील जीवनशैली - घंटों एक ही स्थान पर बैठकर कार्य करना (Sedentary Lifestyle) जहर के समान है। प्रतिदिन कम से कम 30-45 मिनट योग या व्यायाम अनिवार्य करें। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जिम में सप्लीमेंट्स का अंधाधुंध प्रयोग और शारीरिक क्षमता से अधिक व्यायाम घातक हो सकता है। आयुर्वेद के गुणों से भरपूर काढ़ा, हर्बल टी और गर्म पानी का सेवन शरीर के शोधन में सहायक होता है।

तनाव प्रबंधन और निद्रा - करियर और सफलता की अंधी दौड़ में अपने मानसिक सुकून की बलि न दें। प्रतिदिन 10 मिनट का ध्यान (Meditation) और 7-8 घंटे की गहरी नींद आपके हृदय की मरम्मत के लिए सर्वोत्तम औषधि है।

व्यसनों का परित्याग - धूम्रपान, मदिरा, गुटखा, जर्दा और अन्य नशीले पदार्थ सीधे हमारी धमनियों पर प्रहार करते हैं। दीर्घायु होने के लिए इन घातक आदतों को 'ना' कहना ही एकमात्र विकल्प है।

नियमित स्वास्थ्य परीक्षण - जिस प्रकार हम अपने वाहनों की समय पर सर्विसिंग कराते हैं, उसी प्रकार 30 वर्ष की आयु के बाद शरीर की नियमित जाँच (Health Checkup) आवश्यक है। शरीर द्वारा दिए जा रहे छोटे-छोटे संकेतों या दर्द को कभी भी नजरअंदाज न करें। संकल्प से सिद्धि तक 'बचाव ही उपचार है' (Prevention is better than cure) को केवल एक कहावत न रहने दें, बल्कि इसे अपने जीवन का मूलमंत्र बनाएँ। आपका फिट और स्वस्थ रहना केवल आपकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि आपके अपनों की मुस्कुराहट की गारंटी है।

मैं अपने शरीर के प्रति सजग रहूँगा, अनुशासन और संयम का मार्ग अपनाऊँगा, ताकि किसी भी घर का चिराग असमय न बुझे। मैं सजग रहूँगा, मैं स्वस्थ रहूँगा, युवा शक्ति ही राष्ट्र की शक्ति है। यदि आप सुरक्षित हैं, तो देश का भविष्य सुरक्षित है। अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें और जीवन के इस अनमोल उपहार का सम्मान करें।

दया करुणा और पशु कल्याण

– पद्मचंद गांधी जैन

दया एवं करुणा का जन्म संवेदनाओं से होता है। करुणा भाव असहाय, दुःखी, दीन-हीन, लाचार एवं मूक प्राणियों के प्रति होता है। मन की उदारता का भाव केवल मनुष्य जाति के लिए ही नहीं वरन तिरियंच के लिए भी होता है। यद्यपि मनुष्य की भांति पशुओं के साथ मित्रता का सद्व्यवहार होना संभव नहीं है, तो भी उन्हें दुःख न देना, उनके स्वाभाविक अधिकारों का अपहरण नहीं करना, उन पर क्रोध न करना, परितापना न उपजाना, भूखे को न मारना, शक्ति से अधिक बोझ न लादना, हर समय उनकी सार संभाल करना मैत्री है, करुणा है। पशुओं की रक्षा के लिए सद्भावना की आवश्यकता होती है, करुणा की आवश्यकता होती है। याद करो जब अरिष्ट नेमिनाथ भगवान शादी हेतु तोरण पर आए तब पशुओं का क्रंदन सुनकर यह जाना कि इन सभी का वध कर बारात के लिए भोजन परोसा जाएगा। पशुओं की पीड़ा उनसे देखी नहीं गई। करुणा जागी, तोरण से मुँह मोड़ लिया, वैराग्य जागा और संयम धारण कर 22वें तीर्थंकर बने। ऐसी होती है पशुओं के प्रति करुणा।

ऋषभदेव ने एक बैल के मात्र 12 घंटे का छिका बांधा था जिससे वह बैल आहार नहीं कर पाया। परिणाम यह हुआ आदिनाथ भगवान को 12 माह तक आहार नहीं मिला। पीड़ा किसी को भी पहुँचाना उचित नहीं है। उनका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

देखने में आता है कि कितने ही क्रूर पापी पुरुष बिना अपराध के ही पशुओं को पीड़ा पहुँचते हैं, शिकार करते हैं, माँस के लिए उनका वध करते हैं, गोली अथवा पत्थर फेंक कर आकाश में उड़ते पक्षियों को नीचे गिरा देते हैं। उसमें प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। पशु क्रूरता अधिनियम होने के बावजूद भी ऐसे क्रूर कृत्य हैं जो केवल स्वाद शौक एवं मनोरंजन हेतु किया जाता है। ऐसे क्रूर पापियों को समझने की आवश्यकता है। पशुओं में भी प्रेम होता है। वे भी प्रेम की भाषा समझते हैं। वे भी जीना चाहते हैं। उनके प्रति दया एवं करुणा की आवश्यकता है, जिनके द्वारा उन्हें बचाया जा सकता है। उनका पोषण एवं रक्षण करना हमारा परम कर्तव्य है। यह सच है प्रत्येक जीव की आत्मा एक समान होती है। कर्मों के उदय से वह आज पशु-पक्षी बने हैं। हम भी बन सकते हैं। ऐसा विचार कर भीतर में उनके प्रति करुणा का भाव जगाना ही हमारा उद्देश्य हो यही कल्याण है।

पाइथागोरस पर जैन दर्शन का प्रभाव

– महावीर सांगलीकर

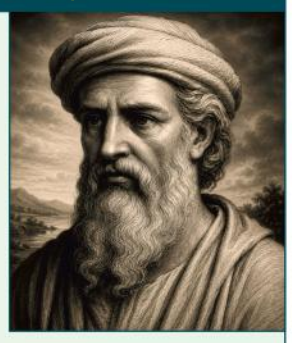

पाइथागोरस एक यूनानी दार्शनिक और एक महान गणिति थे, उनका जन्म 570 ईसा पूर्व में ग्रीस के समोस द्वीप पर हुआ था। उनके ज्यामितीय प्रमेय और सिद्धांत आज भी स्कूलों में पढ़ाये जाते हैं। इसके अलावा उन्हें आधुनिक अंकशास्त्र (Numerology) के जनक के रूप में जाना जाता है। उनकी संगीत में भी गहरी रूचि थी और वह कहते थे कि संगीत और गणित का नजदीकी संबध है।

वह एक धार्मिक आंदोलन के संस्थापक थे, जिसे पाइथागोरसवाद (Pythagoreanism) के नाम से जाना जाता है। इस वाद के अनुयायियों को पाइथागोरसगोरिअन्स (Pythagoreans) इस नाम से जाना जाता था। पाइथागोरसवाद की जैन दर्शन के साथ कई समानताएं हैं। इन समानताओं से कहा जा सकता है कि पाइथागोरस जैन दर्शन से प्रभावित थे, क्योंकि उनका काल भारत के महान दार्शनिक वर्धमान महावीर के काल से मिलता-जुलता है। प्राचीन काल से भारतीयों और यूनानियों के बीच गहरा संबंध था और यूनानी लोग भारत आते-जाते रहते थे।

जैन दर्शन और पाइथागोरसवाद की समानताएं : पाइथागोरस पर जैन दर्शन का प्रभाव/पाइथागोरिअन्स आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते थे और पुनर्जन्म में भी विश्वास रखते थे। इतना ही नहीं, वह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने की संकल्पना में भी विश्वास रखते थे। पाइथागोरिअन्स मानते थे कि आत्मा और शरीर अलग-अलग दो अलग चीजें हैं और आत्मा की मुक्ति के लिए तपस्वी जीवन आवश्यक है। पाइथागोरिअन्स भौतिक और शारीरिक सुखों का त्याग करते थे। यह सारी बातें जैन दर्शन की केंद्रीय संकल्पनायें है।

विशेष खास बात यह है कि पाइथागोरस शाकाहारी थे और पाइथागोरिअन्स के लिए शाकाहारी होना जरूरी था। यह उल्लेखनीय है कि जैन साधुओं और अनुयायियों के लिए शाकाहारी होना अनिवार्य है। पाइथागोरस सभी प्रकार के जीवों का सम्मान करते थे। उन्होंने कहा था, 'जब तक मनुष्य दूसरे जीवों का संहारक बना रहेगा, वह कभी भी स्वास्थ्य या शांति को नहीं जान पाएगा, जब तक मनुष्य जानवरों का वध करते रहेंगे, वे एक-दूसरे को मार डालेंगे। वास्तव में, जो हत्या और पीड़ा का बीज बोता है, वह आनंद और प्रेम नहीं पा सकता।'

पाइथागोरस पर जैन दर्शन का प्रभाव : एक और उल्लेखनीय बात यह है कि पाइथागोरस महिलाओं को सीखने का समान अवसर देते थे। वह कहते थे कि महिलाओं को दर्शन शास्त्र भी सीखना चाहिए। यह बातें भी जैन विचारों से भी मेल खाती हैं। इतिहास और वर्तमान साक्षी है कि जैन धर्म में महिलाओं को शिक्षा पाने का समान अधिकार प्राचीन काल से ही दिया गया है। जैन मिथक के अनुसार प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने गणित और लिपि का ज्ञान सबसे पहले अपनी पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को दिया था।

जैन दर्शन में गणित का अपना एक विशेष महत्व है। जैन गणित यह एक प्रगत विषय है और जैन परंपरा में कई सारे महान गणिति हो चुके हैं, जिन्हें गणित के इतिहास में विश्व भर में जाना जाता है। पाइथागोरस भी एक महान गणिति थे। यह समानता विशेष उल्लेख करने जैसी है। सादे सफेद सूती कपड़े यह पाइथागोरिअन्स का ड्रेस कोड था। पाइथागोरिअन्स और जैन साधुओं में यह और एक समानता दिखाई देती है।

एक और आश्चर्यजनक बात यह है कि पाइथागोरस को अपने पिछले कई जन्म याद थे। यह बात जन्म और पुनर्जन्म की जैन अवधारणा से समानता रखती है। आपको मालूम ही होगा की भगवान महावीर को भी अपने पिछले जन्म याद थे। जैन दर्शन में इसे जातिस्मरण कहा जाता है।

इन सब समानताओं से पता चलता है कि पाइथागोरस जैन दर्शन और जैन धर्म की अवधारणाओं से प्रभावित थे। कोई एक-दो समानताएं होती थी तो अलग बात थी, लेकिन यहाँ तो कई सारी समानताएं हैं। चूंकि प्राचीन भारतियों और यूनानियों के बीच संबंध थे, पाइथागोरस और वर्धमान महावीर समकालीन थे, इसलिए संभव है कि पाइथागोरस वर्धमान महावीर के दर्शन से परिचित और प्रभावित थे।

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा श्री बलदेव राज 'नौलखा' का अभिनन्दन

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली शाखा द्वारा 'चरण-स्पर्श' अभियान के क्रम में 15 मई 2026 को देशभर में विख्यात 'नौलखा' परिवार के वरिष्ठ महानुभाव भामाशाह, प्रख्यात समाजसेवी आदरणीय श्री बलदेवराज 'नौलखा' के सम्मानार्थ उनके निवास पर उपस्थित अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन की अगवानी में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाष ओसवाल जैन, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश जैन 'काहनी', निर्माणाधीन भगवान महावीर हॉस्पिटल, रोहिणी के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. नागेश जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामनिवास जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री दिनेश सुराणा जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश कार्याध्यक्ष श्री राजेश कुमार जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री सुरेन्द्र जैन, प्रान्तीय महामंत्री श्री ललित

ओसवाल जैन, अशोक विहार श्रीसंघ अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र जैन व महामंत्री श्री पद्म पटवा जैन आदि ने उपस्थित होकर माननीय श्री बलदेवराज 'नौलखा' को पगड़ी, शॉल, माला पहनाने के साथ ही अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए उन्हें सम्मान प्रदान किया।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

तमिलनाडु युवा शाखा द्वारा आचार्य सम्राट श्री शिवमुनिजी म. के 55वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में जीवदया कार्यक्रम सम्पन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : पूज्य आचार्य सम्राट् ध्यान योगी डॉ. शिवमुनिजी म. के 55वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की तमिलनाडु युवा शाखा द्वारा आयनावरम स्थित पिंजरापोल में गौसेवा कबूतर दाना जीवदया सेवा कार्यक्रम श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ आयोजित किया गया। गायों को हरा चारा, सब्जी, गुड़ आदि हाथों से दिया गया व कबूतरों को मिक्स अनाज का मिश्रण कर डाला गया। कार्यक्रम का लक्ष्य अहिंसा, सेवा एवं जीवदया का प्रेरणादायी संदेश जन-जन तक पहुँचाना तथा युवाशक्ति को और अधिक इन सेवा कार्यों में जोड़ना है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आशीष रांका, प्रांतीय युवा चेयरमैन आनंद बालेचा, युवा अध्यक्ष मनीष रांका, कार्याध्यक्ष संजय सेठिया, कोषाध्यक्ष शांतिलाल गुगलिया, सह-कोषाध्यक्ष महेंद्र सेठिया, जीवदया मंत्री शांतिलाल रांका, वैयावच्च मंत्री अजीतराज कोठारी, प्रचार-प्रसार मंत्री धर्मेंद्र सिसोदिया, युवा मंत्री नवीन खारीवाल सहित प्रमोद बालेचा, अरिहंत रांका एवं तन्मय समदरिया के साथ अनेक सदस्यों की उपस्थित व भागीदारी सरानीय रही। इसके अतिरिक्त युवा शाखा द्वारा शहर में विचरण कर रहे साधु-साध्वी की विहार सेवा में संलग्न है, उप-प्रवर्तक श्री श्रुतमुनि जी महारासा ठाणा 4 के आन्ध्र प्रदेश से तमिलनाडु की ओर अग्रसर विहार में समय-समय पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री विमल खाबिया, युवा सदस्य सिद्धार्थ रूणवाल के नेतृत्व में निरंतर विहार वैय्यावच सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

प्रेषक : मनीष रांका जैन

बैंगलोर में गुरु भक्त सम्मेलन में बिखरे भक्ति के रंग

बैंगलोर (कर्नाटक) : मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति कर्नाटक के तत्वावधान में पैलेस मैदान के प्रिंसेज श्राइन में आयोजित मरुधर केसरी रूप सुकन गुरु भक्त सम्मेलन में भक्ति व श्रद्धा का संगम दिखाई दिया। श्रीमती सरला दुग्गड़, नीतू बाफना, सुनीता भलगट ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। श्री उत्तमचंद गोठी ने गुरु से संगठित रहने का आव्हान किया, श्री ज्ञानचंद लोढ़ा ने पू. श्री सुकनमुनि जी म. का सोजत से प्राप्त शुभकामना संदेश वाचन किया। पावनधाम जैतारण के संगठन मंत्री अशोक कोठारी ने धाम की गतिविधियों की जानकारी दी। धाम के अध्यक्ष के.सी. बोकड़िया ने गुरुदेवों के प्रति भक्तिभाव प्रकट किए। महामंत्री श्री अशोक धोका ने स्वागत करते हुए समिति की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर गुरु मिश्री-सुकन मुनि के प्रति हाथ उठाकर श्रद्धा का संकल्प

लिया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय समन्वयक जोन-एक श्री सुरेश कुमार लुणावत जैन, उत्तमचंद गोठी, गौतम कांकरिया, गौतमचंद कटारिया, राजेश तालेड़ा, धर्मीचंद तालेड़ा, महेन्द्र भंसाली आदि महानुभावों की उपस्थिति रही।

प्रेषक : अशोक धोका जैन

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

इंदौर निवासी श्रावक श्री जीतमल जैन का संथारा सहित देवलोकगमन

आचार्य भगवान डॉ. शिवमुनि जी म. के आशीर्वाद से 15 मई 2026 की रात्रि में श्री मुकेश जैन के पिताजी, श्री गौरव जैन, श्री सौरभ जैन 'नानू' के दादाजी, वरिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् जीतमल जैन पोरवाल 'पीपरवाड़ा वालो' को संथारा दिया गया और 16 मई को प्रातः 4:20 पर संथारे की पूर्णाहुति हुई।

श्रीमती मीराबाई लुणिया जैन का संथारापूर्वक देवलोकगमन

पुणे (महाराष्ट्र) : तप आराधिका श्रद्धेया श्रीमती मीराबाई रमेश लुणिया जैन ने नवकार महामंत्र के स्मरण के साथ शांत भाव से संथारापूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया। आपने युवाचार्य भगवंत पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. के मुखारविंद से संलेखना संथारा के पच्चखान ग्रहण किए थे तथा नवकार महामंत्र का जाप करते हुए संथारा महामंत्र का जाप करते हुए संथारा सीज गया। आपके द्वारा गत् 39 वर्षों से एकासन तपस्या में रत 492 आयंबिल तप की दीर्घ आराधना जारी थी। आप तपस्या, संयम और साधना की अदभूत प्रतिमूर्ति थी।

सुश्राविका श्रीमती कमला देवी मुणोत जैन का देवलोकगमन

नसीराबाद (राजस्थान) : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विमलचंद मुणोत जैन की पूजनीय माताजी श्रीमती कमलादेवी मुणोत जैन का आकस्मिक देवलोकगमन हो गया। आप एक साधर्मिक, साधु-साध्वियों की सेवा, आहार आदि में अपनी धार्मिक सेवाएं प्रदान करती थीं। आपके जाने से समाज में एक अपूरणीय क्षति हुई है।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

उत्तर प्रदेश प्रांतीय शाखा द्वारा शरबत वितरण

मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) : 15 मई को श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की उत्तर प्रदेश प्रांतीय शाखा के अन्तर्गत मुजफ्फरनगर में लोगों के लिए इस भीषण गर्मी में मीठा शरबत वितरित किया गया। इस अवसर पर सभी महिलाओं एवं पुरुषों ने मिलकर पुण्य कार्य किया, जिसमें प्रांतीय अध्यक्ष श्री कीमतीलाल जैन, प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती नीरू जीवन जैन, प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती रूबी जैन, श्रीमती सुमन जैन, श्री जीवन जैन, श्री अभिनव जैन, श्री सुनील जैन, श्री प्रमोद जैन, श्री मनीष जैन आदि ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

(पृष्ठ 2 का शेष) 'जैन प्रकाश' वास्तव में एक समाचार-पत्र से कहीं अधिक है। यह स्थानकवासी जैन समाज की आत्मा की अभिव्यक्ति है, यह समाज की वैचारिक चेतना, धार्मिक मर्यादा और संगठनात्मक शक्ति का जीवंत प्रतीक है। एक शताब्दी से अधिक समय तक निरंतर प्रकाशित रहना केवल एक संस्थागत उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज के अटूट विश्वास और समर्पण का प्रमाण है। आज आवश्यकता है कि समाज का प्रत्येक वर्ग-युवा, विद्वान, संत, श्रावक-श्राविकाएँ और संगठनात्मक नेतृत्व-इस ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षण देने और आगे बढ़ाने का दायित्व निभाए।

'जैन प्रकाश' ने अतीत को संरक्षित किया है, वर्तमान को दिशा दी है और भविष्य के लिए वैचारिक आलोक का दीप प्रज्वलित किया है। निस्संदेह, भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में इसका स्थान एक ऐसे ज्योति-स्तंभ के रूप में सदैव स्मरण किया जाएगा, जिसने धर्म, समाज और राष्ट्र-तीनों को समान रूप से प्रकाश प्रदान किया।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

युवाचार्यश्री जी का मेवाड़ विचरण

भादसोड़ा में युवाचार्यश्री जी के सान्निध्य में शिवाचार्य संयम प्रकाशोत्सव

भादसोड़ा (राजस्थान) : श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर श्री महेंद्रऋषि जी महाराज ने भादसोड़ा श्रीसंघ में बहु मंडल एवं बालिका मंडल के स्वागत गीत से प्रारंभ हुए आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज के 55वें पावन दीक्षा दिवस के अवसर पर फरमाया कि शिवाचार्य भगवान का जन्म नाम ही उनके माता-पिता द्वारा शिवकुमार दिया गया जो अपने आप में मोक्ष का भाव दर्शाता है। स्थानकवासी संतों में आप पी.एचडी प्रथम संत हुए। पी.एचडी करने के बाद भी शिवमुनि जी रुके नहीं। फिर उनकी जिज्ञासा बढ़ी, भगवान महावीर स्वामी कौन सा ध्यान करते थे। वे स्वयं तीर्थंकर थे फिर भी ध्यानस्थ रहते थे, शोध चलता रहा। ब्यावर के एक श्रावक की प्रेरणा से वर्षीतप प्रारम्भ किया। ज्यादा गर्मी और शारीरिक परिस्थितियों के कारण बीच में छूट गया फिर उन्ही श्रावक जी के कहने पर पुनः वर्षीतप प्रारंभ किया, जिसे 40 वर्ष पूर्ण हो गए। उनकी आत्म-ध्यान साधना, उनका उत्कृष्ट जीवन, 1200 से अधिक साधु-साध्वी जी का नेतृत्व करते हुए भी, भारत के विशाल श्रमण संघ का नेतृत्व करते हुए भी स्वयं की आत्म-साधना से, ध्यान-साधना से कभी समझौता नहीं किया। ऐसे महान शिवाचार्य भगवन की दीक्षा जयंती मना कर हम गुणानुवाद के साथ अपने में गुण विकसित करने का संकल्प लें। 55वीं दीक्षा जयंती पर 55 सामायिक, 55 दिन रात्रि भोजन त्याग, 55 दिन जमीकंद का त्याग, 55 दिन 55 मिनट से अधिक मोबाइल नहीं देखना, 5500 या 55000 जीवदया में दान करें। जैसी जिसकी भावना हो दीक्षा जयंती पर संकल्प लें। तो जयंती मनाना सार्थक हो जाएगा।

इस अवसर पर मेवाड़ उप-प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री कोमल मुनि जी महाराज साहब ने आचार्य भगवान की महानता विद्वता सरलता सौम्यता और उत्कृष्ट जीवन के गुणों का विवेचन करते हुए गुणानुवाद किया। महासती श्री नव्या जी महाराज साहब और काव्या जी महाराज ने गुणानुवाद करते हुए गीतिका प्रस्तुत की। गुजराती अजरामर संप्रदाय के आचार्य भावचंद्र जी महाराज की सुशिष्या श्री हंसकुमारी जी महाराज ने दोनों आचार्य के मधुर मिलन एवं शिवाचार्य की महानता पर प्रकाश डाला। गौतम रांका ने भजन के माध्यम से गुणानुवाद किये। कई संघों के प्रतिनिधियों ने अपने भक्तिभाव व्यक्त किये। संघ मंत्री श्री रमेश जी चंडालिया ने कहा कि श्रीसंघ का असीम सौभाग्य है कि शिवाचार्य दीक्षा जयंती युवाचार्य भगवन, उप-प्रवर्तकश्री, श्री हितेंद्रऋषि महाराज, महासती दिव्य ज्योति महाराज, महासती श्री सुचेता महाराज, महासती श्री हंसकुमारी जी महाराज आदि महान संत सतियाँजी महाराज के पावन सान्निध्य में मनाने का अवसर मिला। बाहर से पधारे सभी संघों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया।

गुरु अम्बेश पावनधाम फतहनगर में हुआ श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्रऋषि जी म. का भव्य मंगल प्रवेश

फतहनगर (राजस्थान) : 21 मई को गुरु अम्बेश मैमोरियल संस्थान पावनधाम, फतहनगर की बहुप्रतीक्षित विनती पर श्रमण संघीय युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म., हितमित भाषी पू. श्री हितेंद्रऋषि पू. श्री आदि ठाणा 4 का भव्य शोभायात्रा एवं श्रद्धाभाव से मंगल प्रवेश हुआ। पावनधाम पहुंचने पर संस्थान के प्रमुख प्रकाश सिंघवी, कोषाध्यक्ष दिनेश सिंघवी, गजेन्द्र चंडालिया, नितीन सेठिया सहित फतहनगर श्रीसंघ के संरक्षक दिनेश सांभर, अध्यक्ष कनकमल बाफना, सम्पतलाल बाफना एवं पदाधिकारियों ने गुरु भगवंतों का श्रद्धापूर्वक अभिनंदन किया।

इस अवसर पर गुरु अम्बेश, सौभाग्य एवं मदन परंपरा के मेवाड़ क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे उप-प्रवर्तक कोमलमुनि जी, उप-प्रवर्तिनी विजयप्रभा महासती, विद्याश्री उपप्रवर्तिनी दिव्य ज्योति जी, महासती सुचेता जी, साध्वी महिमाश्री, साध्वी ऐष्णाश्री आदि साधु-साध्वीवृंद ने भी जयघोषों के साथ युवाचार्यश्री का वंदन-अभिनंदन किया।

मंगल प्रवेश एवं धर्मसभा में मेवाड़ भवन ट्रस्ट मुंबई के संरक्षक चतरलाल लोढ़ा, रोशनलाल बड़ाला, अध्यक्ष इन्द्रमल बड़ाला, विजय कोठारी, नरेन्द्र नवलखा, पथिक विहारधाम के अध्यक्ष मांगीलाल लोढ़ा, अम्बाशोध संस्थान के अध्यक्ष ललित लोढ़ा, धर्मज्योति परिषद के संरक्षक कंवरलाल सूरिया, प्रेमसज्जन संस्थान के अध्यक्ष सुरेश सूरिया, मेवाड़ युवक मंडल के बबलू रांका, जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांत के अध्यक्ष आनन्द चपलोत एवं विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। इस दौरान उपस्थित संतों एवं साध्वीवृंद ने भी अपने प्रेरक विचार व्यक्त किए। प्रेषक : प्रवक्ता सुनील चपलोत

राष्ट्ररत्न श्री उपेन्द्र मुनि जी महाराज 'शास्त्री' का 63वाँ जन्मोत्सव मना

नई दिल्ली : शास्त्री नगर दिल्ली में अहिंसा संघ युवा शाखा दिल्ली प्रदेश द्वारा राष्ट्ररत्न पूज्य गुरुदेव श्री उपेन्द्र मुनि जी महाराज के 63वें जन्मोत्सव पर भव्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 17 मई 2026, रविवार को प्रातः 8:30 बजे से सामुदायिक भवन, गुलाबी बाग, दिल्ली में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में देशभर से श्रद्धालुजनों (गुरुभक्तों) ने उपस्थित होकर अपनी सद्भावनाएं प्रकट की।

कार्यक्रम में राष्ट्रसंत, प्रज्ञा महर्षि पं. रत्न पूज्य गुरुदेव श्री उपेन्द्र मुनि जी महाराज के मंगल प्रवचन एवं आशीर्वचन से श्रद्धालु लाभान्वित हुए। इस अवसर पर प्रवचन भास्कर समाज सेतु पूज्य श्री सुखदर्शन मुनि जी महाराज, मधुरवक्ता पूज्य श्री महादेव मुनि जी महाराज, पूज्य श्री इन्द्रेश मुनि जी महाराज तथा प्रवचन भास्कर महासाध्वी डॉ. सूर्या जी महाराज, विद्याभिलाषी साध्वी श्री गौरी जी महाराज आदि संत-साध्वियों के मंगल दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दिल्ली के प्रांतीय पदाधिकारियों ने मेयर श्री प्रवेश वाही से भेंट कर शुभकामनाएं दी

नई दिल्ली : बृहस्पतिवार 14 मई को जैन समाज के एक गरिमामयी प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली के नवनियुक्त मेयर श्री प्रवेश वाही से भेंट की और उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई दी। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल द्वारा उन्हें इस प्रतिनिधिमंडल में जैन कॉन्फ्रेंस के पर्यवेक्षक श्री सुभाष ओसवाल जैन, श्री मनोज कुमार जैन (मनोनीत निगम पार्षद) तथा जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली से प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन, प्रांतीय महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन उपस्थित रहे।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

गौसेवा का सफल आयोजन सम्पन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : अरिहंत देव ग्रुप तमिलनाडु की 104वीं मासिक अमावस्या पर गौसेवा का सफल आयोजन ऋषभ गौशाला पेरिपालयम में अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। सभी साथियों ने गौशाला पहुँचकर भावपूर्ण गौसेवा एवं जाप किया। इस अवसर पर टीम ADGT की ओर से गौशाला को एक स्वचालित घास काटने की मशीन भेंट की गई। यह इस आयोजन का विशेष आकर्षण रहा। दानवीर भामाशाह श्री सुनील खेतपालिया द्वारा प्रदत्त जीवदया निधि से एक गौ माता को कत्लखाने से बचाकर श्री सन्मती गौशाला, आवडी में सुरक्षित स्थान प्रदान किया गया। प्रेषक : कमलेश लोढ़ा जैन

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 22-05-2026
Date of Posting : 28/29-05-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ अंक : 12 ❊ पृष्ठ : 8
माह : मई ❊ सप्ताह : 22 मई से 28 मई

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

जैन कॉन्फ्रेंस के प्रथम अध्यक्ष मारवाड़ के 'शिरोमणि सेठ' रायसाहब चांदमल जी जैन (रीयांवाले)

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

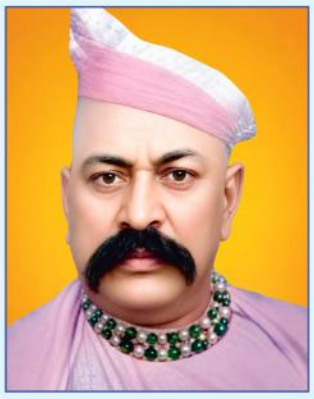

स्थानकवासी जैन समाज का इतिहास केवल त्याग, तपस्या और अध्यात्म तक ही सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण, समाज सेवा और संकट के समय संपूर्ण राज्य को संबल देने में भी इस समाज के पूर्वजों का अतुलनीय योगदान रहा है। 'जैन प्रकाश साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र' की इस विशेष श्रृंखला में आज हम बात कर रहे हैं श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के प्रथम अध्यक्ष रायसाहब श्रीमान् चांदमल जी रीयांवाले की, जिनका जीवन गौरव, स्वाभिमान और परमार्थ की एक जीवंत मिसाल था।

जब महाराजा ने कहा - "मेरे राज्य में केवल ढाई घर हैं", रायसाहब चांदमल जी के परिवार की प्रतिष्ठा और वैभव का अंदाजा मारवाड़ के इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना से लगाया जा सकता है। एक बार मारवाड़ (जोधपुर) के महाराजा श्री मानसिंह जी से एक अंग्रेज अधिकारी ने कौतूहलवश पूछा कि आपके राज्य में कुल कितने घर हैं? महाराजा ने बेहद गर्व के साथ उत्तर दिया-"केवल ढाई घर!"

जब अंग्रेज ने इसका अर्थ पूछा, तो महाराजा ने स्पष्ट किया कि इन ढाई घरों में से 'एक पूरा घर' रीयां के जैन सेठों का है, दूसरा बिलाड़े के दीवान का है और आधा घर बाकी की पूरी मारवाड़ का है। यह घटना दर्शाती है कि उस दौर में रीयां के जैन परिवार का सामाजिक और आर्थिक कद कितना विशाल था।

> *"इतिहास गवाह है कि किसी भी समाज की पहचान केवल उसकी आबादी से नहीं, बल्कि उसके पुरखों के महान चरित्र और उनके द्वारा किए गए ऐतिहासिक कार्यों से होती है। श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का इतिहास ऐसे ही अनगिनत समाजसेवियों और दानवीरों के योगदान से सुसज्जित है। 'जैन प्रकाश' की इस विशेष आलेख श्रृंखला के माध्यम से हमारा उद्देश्य स्थानकवासी जैन इतिहास के उन गौरवशाली महान व्यक्तित्वों को वर्तमान पीढ़ी के सामने लाना है, जिनके उल्लेख के बिना हमारा सामाजिक इतिहास अधूरा है। आइए, आज हम अपनी समृद्ध विरासत के पन्नों को पलटते हैं और नमन करते हैं उस युगपुरुष को जिसने स्थानकवासी जैन समाज का मस्तक पूरे देश में ऊंचा किया..."*

अकाल में रीयां से जोधपुर तक लग गई थी गाड़ियों की कतार : रीयां का यह स्थानकवासी जैन परिवार केवल धनवान ही नहीं, बल्कि परम दानी भी था। एक बार जब मारवाड़ में भीषण अकाल (दुष्काल) पड़ा, तो प्रजा को भुखमरी से बचाने के लिए महाराजा मानसिंह जी को स्वयं सहायता मांगने रीयां जाना पड़ा। संकट की इस घड़ी में जैन श्रेष्ठियों ने अपनी तिजोरियाँ खोल दी। सेठ साहब ने तत्कालीन चांदी के रुपयों से भरे इतने छकड़े (बैलगाड़ियाँ) सहायता के लिए भेजे कि रीयां से लेकर जोधपुर तक गाड़ियों की एक लंबी कतार लग गई। इस अभूतपूर्व और ऐतिहासिक मदद से प्रभावित होकर जोधपुर राज्य ने उन्हें 'शिरोमणि सेठ' की उपाधि से विभूषित किया, वहीं आम जनता इस पूरे परिवार को आदर से 'कुबेर कुल' कहने लगी।

जैन कॉन्फ्रेंस के प्रथम अध्यक्ष-मूक सेवा के प्रतिमान : इसी गौरवशाली परंपरा में सेठ श्री रेवामल जी के 'कुबेर कुल' में यशस्वी पुत्र श्री चांदमल जी रीयांवाले का जन्म हुआ। जब जैन समाज को संगठित करने के लिए श्री ऑल इंडिया जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कॉन्फ्रेंस की स्थापना की बात आई, तो प्रथम अध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से चांदमल जी का नाम सामने आया। हालाँकि, वे अत्यधिक विनम्र थे और पद लोलुपता से कोसों दूर थे। श्री दुर्लभ जी भाई, श्री गिरधरलाल भाई, श्री अमरचन्द जी पीतलिया और श्री केसरीमल जी भंडारी जैसे समाज के शीर्ष नेतृत्व को उन्हें अध्यक्ष पद स्वीकार करने के लिए बहुत मान-मनुहार करनी पड़ी। पद संभालने के बाद वे बोलते बहुत कम थे, लेकिन मूक भाव से प्राणिमात्र की सेवा में निरंतर लीन रहते थे। उनके कार्यकाल में जैन कॉन्फ्रेंस का मुख्य कार्यालय उनके गृह-निवास से ही संचालित होता था।

अगली पीढ़ी ने भी बढ़ाया समाज का मान : रायसाहब चांदमल जी के संस्कारों को उनकी अगली पीढ़ी ने भी बखूबी से आगे बढ़ाया। राय बहादुर सेठ छगनमलजी रीयांवाले (सुपुत्र): उन्होंने मात्र 22 वर्ष की युवावस्था में अजमेर में जैन कॉन्फ्रेंस का तीसरा अधिवेशन इतनी कुशलता से प्रबंधित और सफल कराया कि पूरे देश के स्थानकवासी जैन समाज में उनका नाम आदर से लिया जाने लगा। वे अल्पायु में ही स्वर्गवासी हो गए। सेठ मगनमल जी रीयांवाले (सुपुत्र): भाई के जाने के बाद उन्होंने समाज की कमान संभाली और लगातार 8 वर्षों तक जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री के पद पर रहकर समाज को नई दिशा दी।

जीवदया और 'अहिंसा - प्रचारक' का केंद्र : रीयांवाले परिवार का निवास स्थान केवल एक महल नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और धार्मिक क्रियाओं का तीर्थ था। वहाँ चौबीसों घंटे नवकार मंत्र, भक्तामर स्तोत्र और कल्याण मंदिर स्तोत्र की मांगलिक ध्वनियाँ गूंजती रहती थीं। जीवदया (पशु-पक्षियों की रक्षा) के कार्यों के लिए यह घर पूरे क्षेत्र का मुख्य केंद्र था। समाज में अहिंसा के संदेश को फैलाने के लिए इसी परिवार के प्रयासों से 'अहिंसा-प्रचारक' नामक एक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन भी किया जाता था।

आज रायसाहब चांदमल जी रीयांवाले और उनके सुपुत्र सशरीर हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास के पन्नों पर उनके द्वारा छोड़ी गई अमिट छाप हमेशा चमकती रहेगी। संकट के समय राज्य के पीछे ढ़ाल बनकर खड़े होना, धन का उपयोग जीवदया में करना और समाज को संगठित करने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देना-यही रीयांवाले परिवार का असली गौरव था। ऐसे महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर ही वर्तमान जैन समाज अपनी गौरवशाली विरासत को अक्षुण्ण रख सकता है।

(शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत में संग्रहित दुर्लभ दस्तावेजों के आधार पर)

जैन गौरव अमर हरिशचन्द दगडोबा जैन

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हैदराबाद मुक्ति संग्राम का भी बड़ा महत्व है। हैदराबाद को निजाम राज से मुक्ति दिलाने के लिये भी देश प्रेमियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। हरिशचन्द्र महाराष्ट्र के परभणी जिले के मानवत ग्राम में सपरिवार रहते थे। 1937 में हरिशचन्द्र के भाई को रजाकारों ने मार दिया था। फिर भी हरिशचन्द्र समय-समय पर राज्याधिकारियों से लोहा लेते रहे। इस संघर्ष के लिये वे धर्माबाद जि. नांदेड आकर बस गये थे। वहाँ उन्होंने स्वामी रामानन्द तीर्थ जैसे प्रभावशाली नेताओं के नेतृत्व में काम किया।

स्वामी जी के प्रमुख साथी श्री गोविन्द राव पानसरे के सहकारी बनकर हरिशचन्द्र जी कार्य करते रहे। 1946 के अक्टूबर में निजाम सरकार ने सभी साथियों को हिरासत में लिया। जैसे-तैसे वहाँ से छूटकर धर्माबाद आ रहे थे, रजाकारों ने घेर लिया। घटना स्थल पर काफी जख्मी हो गये थे, 2-3 दिनों में ही वे शहीद हो गये। हरिशचन्द्र जी के पुत्र श्री मधुकर राव भी स्वतंत्रता सेनानी हैं।

जैन धर्म : श्वेताम्बर परंपरा और सफेद वस्त्रों का विज्ञान

सफेद वस्त्र धारण करना केवल एक धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि एक गहरा वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार है। आइए इसे समझते हैं : -

1. ऊष्मप्रवैगिकी (Thermodynamics) : शरीर का तापमान नियंत्रण विज्ञान : सफेद रंग में 'अल्बेडो प्रभाव' सबसे अधिक होता है, जो सूर्य की गर्मी को सोखने के बजाय परावर्तित (Reflect) कर देता है।

अर्थ : शरीर ठंडा रहने से ऊर्जा बचती है, जिसका उपयोग जैन साधु 'तप' और 'ध्यान' में करते हैं।

2. तंत्रिका-मनोविज्ञान (Neuro&psychology) : मानसिक शांति विज्ञान : सफेद रंग मस्तिष्क को 'Visual Silence' (दृश्य मौन) प्रदान करता है, जिससे अनावश्यक उत्तेजना कम होती है।

अर्थ : यह एकाग्रता बढ़ाने और मन को 'समभाव' (Equanimity) में रखने में मदद करता है।

3. सूक्ष्मजीव विज्ञान (Microbiology) और अहिंसा विज्ञान : सफेद धरातल पर छोटे जीव, बैक्टीरिया या धूल तुरंत दिखाई दे जाते हैं।

अर्थ : जीव दिखने पर उनकी रक्षा संभव है, जिससे अनजाने में होने वाली हिंसा रुकती है। यह 'अहिंसा' का वैज्ञानिक पालन है।

4. क्रोमोथेरेपी (Color Therapy) : पूर्ण संतुलन विज्ञान : सफेद रंग सात रंगों का मिश्रण है, जो पूर्ण ऊर्जा संतुलन का प्रतीक है।

अर्थ : यह 'Purity Mindset' (पवित्र सोच) बनाता है। सादे कपड़े अहंकार को मिटाकर सादगी का बोध कराते हैं।

वैज्ञानिक सारांश : ऊष्मा परावर्तन - ध्यान के लिए शारीरिक अनुकूलता।

रंग विज्ञान : मानसिक स्थिरता और शांति।

दृश्यता : अहिंसा महाव्रत का पूर्ण पालन।

मनोविज्ञान : पवित्र और विकारमुक्त मानसिकता।

(व्हाट्ऐप ग्रुप से साभार)

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906